

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था की पत्रिका

(हिन्दी परिशिष्ट)

सम्पादक :—डॉ० बी० बी० पी० एस० गोयल

खंड ३५]

अप्रैल, १९८३

अंक १]

अनुक्रमणिका

1. अन्तःप्रजनन प्रणाली-1 के अध्ययन की पीढ़ी आन्व्यूह विधि
—के० सी० जार्ज iii
2. दो असतत प्रतिबंधी बंटनों की समानता का परीक्षण
—विष्णु दयाल झा iii
3. उपसंगी सूचना के प्रयोग द्वारा समष्टि माध्य के आ०स०प्रा०
[PPS] आकलकों का एक वर्ग
—हरबंश सिंह झज्ज एवं एस० के० श्रीवास्तव iv
4. समानुपातिक परिकल्पना का परीक्षण
—एस० पी० सिंह, एम० प्रताप सिंह एवं एम० एन० दास iv

अन्तः प्रजनन प्रणाली-I के अध्ययन की पीढ़ी आव्यूह विधि

द्वारा

के० सी० जार्ज

केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन पीढ़ी आव्यूह तकनीक द्वारा पूर्ण सहोदर तथा पैतृक-सन्तान मैथुन प्रणालियों के अन्तर्गत पूर्ण-सहोदर युग्मों तथा पैतृक सन्तान युग्मों के संयुक्त बंटन की गणना से तथा उनसे इन युग्मों के सहसम्बन्ध निकालने से भी सम्बन्धित है। पूर्ण सहोदर मैथुन की स्थिति में यह विधि कठिन है, परन्तु पैतृक-सन्तान मैथुन की स्थिति में यह तुलनात्मक रूप से सरल है, चूंकि इस स्थिति में प्रतिबंधी प्रायिकता आव्यूह सरलता से उत्पन्न किया जा सकता है। पूर्ण सहोदर तथा पैतृक-सन्तान मैथुन प्रणालियों के अन्तर्गत पूर्ण-सहोदर युग्मों तथा पैतृक-सन्तान युग्मों के बीच सहसम्बन्ध उस विशेष मैथुन प्रणाली के सतत मैथुन की दस पीढ़ियों के लिए परिकलित किए गए थे तथा सहसम्बन्ध की उन्नति की उपयुक्त व्याख्या की गयी थी।

दो असतत प्रतिबंधी बंटनों की समानता का परीक्षण

द्वारा

विष्णु दयाल झा

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

सारांश

जब प्रत्येक प्रतिदर्श का आकार यादृच्छिक हो तो विशुद्ध रूप से असतत बंटनों की समानता के परीक्षण हेतु विल्कोक्सन-मान-विहटने परीक्षा प्रस्तावित की गई है। मध्य कोटि प्रक्रिया का प्रयोग करने हुए उपरोक्त परीक्षा की विवेचना की गई है। परीक्षण प्रतिदर्शज (p ज्ञात) के माध्य एवं प्रसरण अभिगणित किये गए हैं। अज्ञात p की स्थिति पर भी चर्चा की गई है।

उपसंगी सूचना के प्रयोग द्वारा समष्टि माध्य के आ० स० प्रा०
(PPS) आकलकों का एक वर्ग

द्वारा

हरबंश सिंह झज्ज एवं एस० के० श्रीवास्तव
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

सारांश

किसी परिमित समष्टि के माध्य के आकलकों के एक वर्ग पर विचार किया गया है। यह दो उपसंगी चरों पर आधारित है, जिनमें से एक को चयन अवस्था पर तथा दूसरे को आकलन अवस्था पर आकलक को सुधारने के लिए प्रयोग किया गया है। इससे अग्रवाल व कुमार (1980) द्वारा प्रस्तावित आकलक तथा श्रीवास्तव व झज्ज (1980) द्वारा प्रस्तावित आकलक का भी व्यापीकरण हो जाता है। इस वर्ग में आकलकों की अनन्तस्पर्शीय अभिनति तथा माध्य वर्ग त्रुटि प्राप्त की गई है तथा वर्ग के अनुकूलतम आकलक को भी प्राप्त किया गया है।

समानुपातिक परिकल्पना का परीक्षण

द्वारा

एस० पी० सिंह*, एम० प्रताप सिंह* एवं एम० एन० दास**
जे० बी० कालिज, बड़ौत* भा० सा० स०, नई दिल्ली**

सारांश

एक समानुपातिक परिकल्पना निरूपित की गई है यह सिद्ध किया गया है कि यादृच्छिकीकृत खंडक अभिकल्पना (आर० बी० डी०) से एकत्रित आंकड़ों के लिए स्थिति—1 में परिकल्पना के अन्तर्गत प्राप्त किए उपचार वर्ग-योग में समरूपता है, परन्तु दो स्थितियों में स्वातन्त्र्य-संख्या में भिन्नता होती है। समानुपातिक परिकल्पना की स्थिति में उपचार वर्ग योग के लिए स्वातन्त्र्य-संख्या एक कम हो जाती है परन्तु त्रुटि के लिए स्वातन्त्र्य-संख्या अप्रभावित रहती है।